

---

# Revavirachitam Shiva Dhyanam

---

## रेवाविरचितं शिवध्यानम्

---

### Document Information

Text title : Revavirachitam Shiva Dhyanam

File name : revAvirachitaMshivadhyAnam.itx

Category : shiva, shivarahasya, dhyAnam

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shivarahasyam | harAkhyah tRitIyAMshaH | uttarArdham | adhyAyaH 14  
| 10.2-23.1 ||

Latest update : January 30, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

रेवाविरचितं शिवध्यानम्



पश्यन्ती मण्डलं भानोः ध्यायन्ती साम्बमीश्वरम् ॥ १०.२ ॥  
सूर्यमण्डलमध्यस्थं स्वर्णकुण्डलमण्डितम् ।  
स्वर्णाङ्गदप्रभाकीर्णं स्वर्णकेयूरभासुरम् ॥ ११ ॥  
दिव्यरत्नाङ्गुलीयानां शोभया च विराजितम् ।  
किरीटतारहाराणां राशिभिश्च विराजितम् ॥ १२ ॥  
सुवर्णरचितानन्तमणिमेखलया वृतम् ।  
स्फुरन्नूपुरशिञ्जीरशिञ्जितैश्च विराजितम् ॥ १३ ॥  
दिव्याभरणसम्पूर्णवामाङ्गगिरिजायुतम् ।  
स्तूयमानं वेदसङ्घैर्नीलग्रीवं महेश्वरम् ॥ १४ ॥  
सेव्यमानं सुरगणैः प्रमथाद्यैश्च सेवितम् ।  
भाललोचनमाराध्यं त्रिशूलाभयपाणिनम् ॥ १५ ॥  
कटाक्षैरमृताकारैः प्रपश्यन्तं मुहुर्मुहुः ।  
स्वभक्तान् नन्दिकेशादीन् मन्दारासारसेवितम् ॥ १६ ॥  
गौरीमनोहरं धीरं जरामरणवर्जितम् ।  
अप्रमेयमनाद्यन्तं व्युत्केशं कपर्दिनम् ॥ १७ ॥  
कल्याणरूपमानन्दं आनन्दघनमद्वयम् ।  
महाविद्याप्रदातारं दातारं सम्पदामपि ॥ १८ ॥  
स्मेरधाराधराधारं नित्यं गौरीमनोहरम् ।  
अपारकरुणापूरपरिपूर्णं च सुन्दरम् ॥ १९ ॥  
उत्पत्तिस्थितिसंहारहेतुभूतं सनातनम् ।  
तडिन्मण्डलसङ्काशदिव्यवस्त्रविराजितम् ॥ २० ॥  
हिरण्यबाहुमीशानमपराजितमद्वयम् ।

प्रतिक्षणेऽप्यभिनवं महोदारं सुरस्तुतम् ॥ २१ ॥

अनन्ताप्रतिमामेयकल्याणगुणसागरम् ।

वरदानोन्मुखं शान्तं सर्वाशास्यवरप्रदम् ॥ २२ ॥

एतादृशं महादेवं ध्यायन्ती मनसा शिवम् । २३.१

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते रेवाविरचितं शिवध्यानं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । हराख्यः तृतीयांशः । उत्तरार्धम् । अध्यायः १४। १०.२-  
२३.१ ॥

- .. shrIshivarahasyam . harAkhyaH tRRitIyAMshaH . uttarArdham .  
adhyAyaH 14. 10.2-23.1 ..

Proofread by Ruma Dewan

---

—  
*Revavirachitam Shiva Dhyanam*

pdf was typeset on February 2, 2024

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

